



Sweety

25 Aug 1985

08:45 PM

Ludhiana

Model: Web-MyKundli

Order No: 121528701

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: स्त्रीलिंग
जन्म तिथि _____: 25/08/1985
दिन _____: रविवार
जन्म समय _____: 20:45:00 घंटे
इष्ट _____: 36:56:22 घटी
स्थान _____: Ludhiana
राज्य _____: Punjab
देश _____: India

अक्षांश _____: 30:56:00 उत्तर
रेखांश _____: 75:52:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:26:32 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 20:18:28 घंटे
वेलान्तर _____: -00:02:07 घंटे
साम्पातिक काल _____: 18:33:47 घंटे
सूर्योदय _____: 05:58:27 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:58:17 घंटे
दिनमान _____: 12:59:50 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: शरद
सूर्य के अंश _____: 08:42:11 सिंह
लग्न के अंश _____: 18:43:31 मीन

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: मीन - गुरु
राशि-स्वामी _____: धनु - गुरु
नक्षत्र-चरण _____: मूल - 4
नक्षत्र स्वामी _____: केतु
योग _____: प्रीति
करण _____: वणिज
गण _____: राक्षस
योनि _____: श्वान
नाड़ी _____: आद्य
वर्ण _____: क्षत्रिय
वश्य _____: मानव
वर्ग _____: मूषक
युँजा _____: अन्त्य
हंसक _____: अग्नि
जन्म नामाक्षर _____: भी-भीनी
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: ताम्र - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: कन्या

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1907	भाद्रपद	3
पंजाबी	संवत : 2042	भाद्रपद	10
बंगाली	सन् : 1392	भाद्रपद	9
तमिल	संवत : 2042	आवनी	9
केरल	कोल्लम : 1161	चिंगम	9
नेपाली	संवत : 2042	भाद्रपद	10
चैत्रादि	संवत : 2042	श्रावण	शुक्ल 10
कार्तिकादि	संवत : 2042	श्रावण	शुक्ल 10

पंचांग

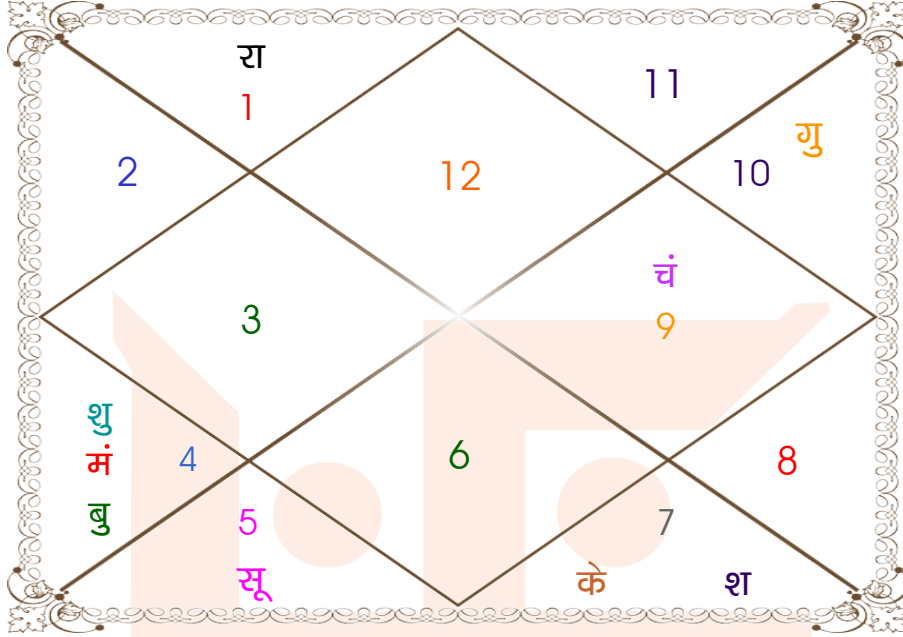
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 10
तिथि समाप्ति काल _____ : 17:49:11
जन्म तिथि _____ : 11
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : मूल
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 26:08:47 घंटे
जन्म योग _____ : मूल
सूर्योदय कालीन योग _____ : विष्कुम्भ
योग समाप्ति काल _____ : 11:33:14 घंटे
जन्म योग _____ : प्रीति
सूर्योदय कालीन करण _____ : तैतिल
करण समाप्ति काल _____ : 06:33:22 घंटे
जन्म करण _____ : वणिज
भयात _____ : 44:45:35
भभोग _____ : 58:15:01
भोग्य दशा काल _____ : केतु 1 वर्ष 7 मा 11 दि

घात चक्र

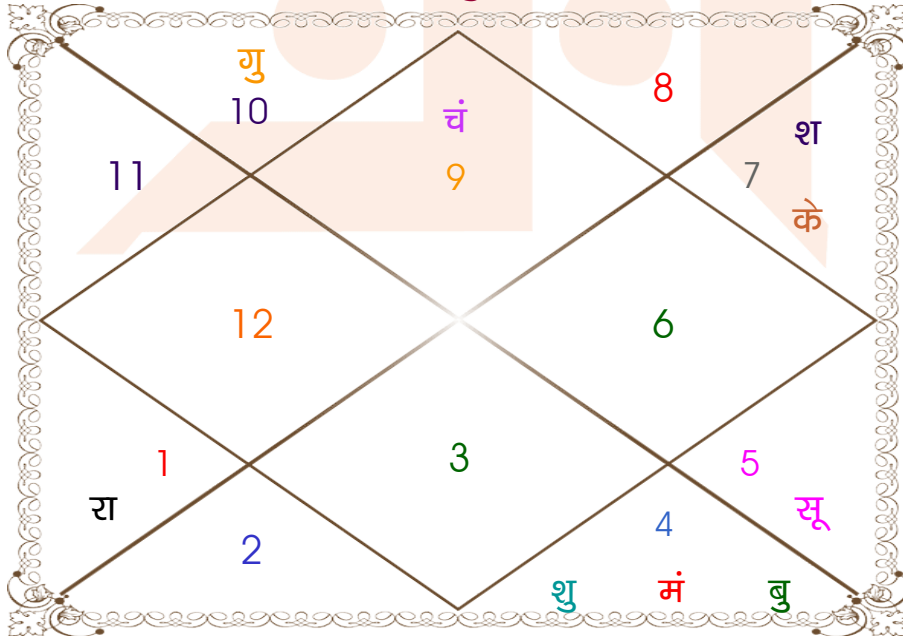
मास _____ : श्रावण
तिथि _____ : 3-8-13
दिन _____ : शुक्रवार
नक्षत्र _____ : भरणी
योग _____ : वज्र
करण _____ : तैतिल
प्रहर _____ : 1
वर्ग _____ : मार्जार
लग्न _____ : धनु
सूर्य _____ : तुला
चन्द्र _____ : कन्या
मंगल _____ : वृश्चिक
बुध _____ : सिंह
गुरु _____ : धनु
शुक्र _____ : कुम्भ
शनि _____ : कन्या
राहु _____ : कुम्भ

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

ल	रा		
			शु मं बु
गु			सू
चं		के श	

लग्न कुंडली

	रा	ल
शु मं बु		गु
सू	श के	चं

विंशोत्तरी
केतु 1वर्ष 7मा 11दि
केतु

25/08/1985

07/04/2100

केतु	07/04/1987
शुक्र	07/04/2007
सूर्य	07/04/2013
चन्द्र	07/04/2023
मंगल	07/04/2030
राहु	06/04/2048
गुरु	06/04/2064
शनि	07/04/2083
बुध	07/04/2100

योगिनी

उल्का 1वर्ष 4मा 18दि
सिद्धा

13/01/2023

13/01/2030

सिद्धा	24/05/2024
संकटा	13/12/2025
मंगला	22/02/2026
पिंगला	14/07/2026
धान्या	12/02/2027
भामरी	23/11/2027
भद्रिका	12/11/2028
उल्का	13/01/2030

Meenna Salaria Astro & Numerio

Delhi

9667113751

salaria.meena@gmail.com

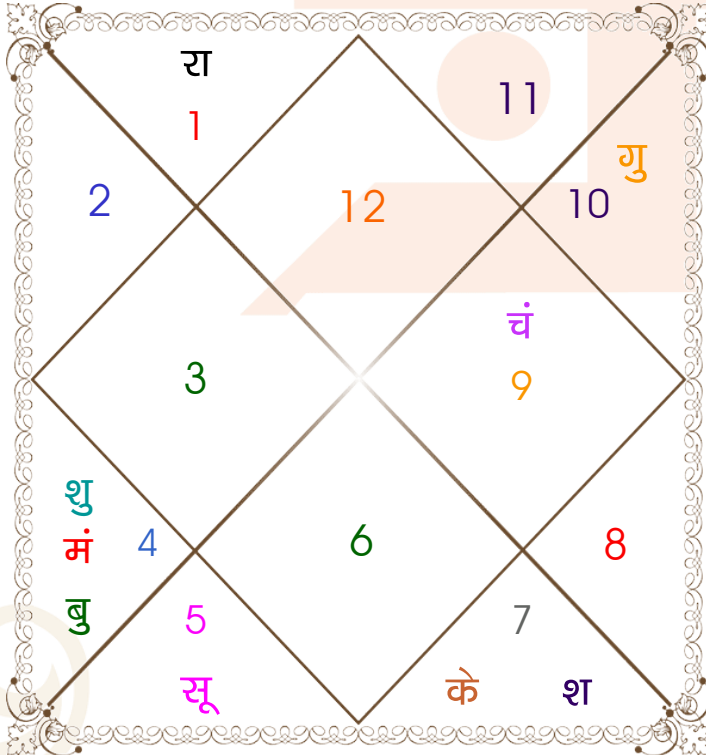
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मीन	18:43:31	524:03:10	रेवती	1	27	गुरु	बुध	केतु	---
सूर्य			सिंह	08:42:11	00:57:53	मघा	3	10	सूर्य	केतु	गुरु	मूलत्रिकोण
चंद्र			धनु	10:15:30	13:41:37	मूल	4	19	गुरु	केतु	शनि	सम राशि
मंगल	अ		कर्क	26:32:14	00:38:15	आश्लेषा	3	9	चंद्र	बुध	गुरु	नीच राशि
बुध			कर्क	20:58:27	00:36:20	आश्लेषा	2	9	चंद्र	बुध	शुक्र	शत्रु राशि
गुरु	व		मक	15:46:11	00:06:35	श्रवण	2	22	शनि	चंद्र	शनि	नीच राशि
शुक्र			कर्क	03:22:12	01:10:51	पुष्य	1	8	चंद्र	शनि	शनि	शत्रु राशि
शनि			तुला	28:34:26	00:02:55	विशाखा	3	16	शुक्र	गुरु	शुक्र	उच्च राशि
राहु	व		मेष	18:21:39	00:04:47	भरणी	2	2	मंगल	शुक्र	राहु	शत्रु राशि
केतु	व		तुला	18:21:39	00:04:47	स्वाति	4	15	शुक्र	राहु	चंद्र	सम राशि
हर्ष			वृश्चि	20:18:42	00:00:08	ज्येष्ठा	2	18	मंगल	बुध	शुक्र	---
नेप	व		धनु	07:16:39	00:00:34	मूल	3	19	गुरु	केतु	राहु	---
प्लूटो			तुला	08:49:07	00:01:26	स्वाति	1	15	शुक्र	राहु	गुरु	---
दशम भाव			धनु	14:06:09	--	पूर्वाषाढा	--	20	गुरु	शुक्र	शुक्र	--

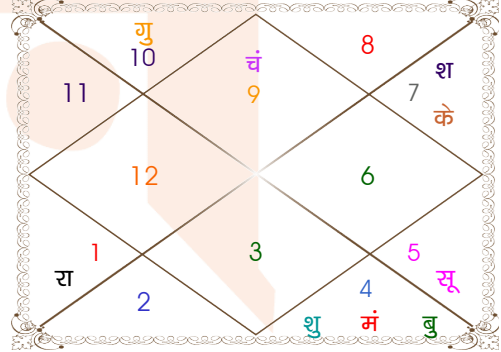
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:39:13

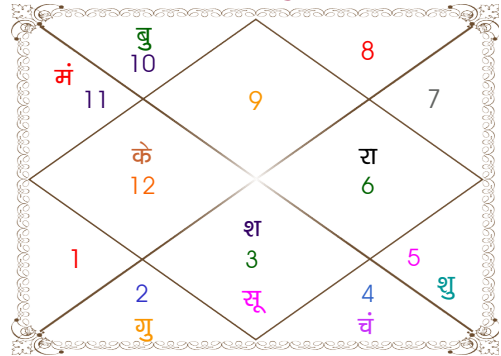
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



Meenna Salaria Astro & Numerio

Delhi

9667113751

salaria.meena@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	मीन 02:57:18	मीन 18:43:31
2	मेष 02:57:18	मेष 17:11:04
3	वृष 01:24:50	वृष 15:38:37
4	वृष 29:52:23	मिथुन 14:06:09
5	मिथुन 29:52:23	कर्क 15:38:37
6	सिंह 01:24:50	सिंह 17:11:04
7	कन्या 02:57:18	कन्या 18:43:31
8	तुला 02:57:18	तुला 17:11:04
9	वृश्चिक 01:24:50	वृश्चिक 15:38:37
10	वृश्चिक 29:52:23	धनु 14:06:09
11	धनु 29:52:23	मकर 15:38:37
12	कुम्भ 01:24:50	कुम्भ 17:11:04

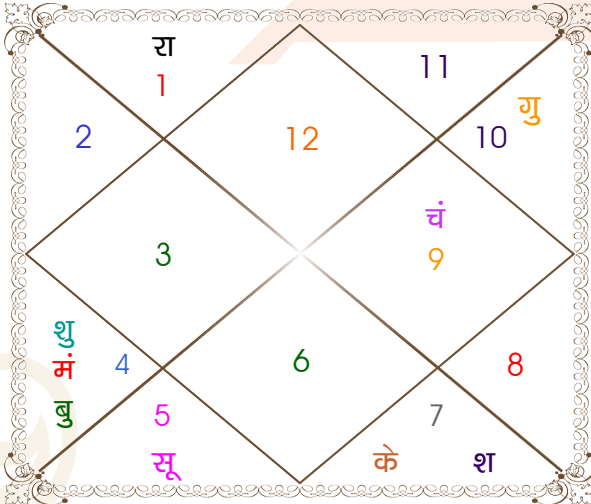
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मीन	18:43:31
2	मेष	24:23:02
3	वृष	20:54:29
4	मिथुन	14:06:09
5	कर्क	08:23:56
6	सिंह	08:27:17
7	कन्या	18:43:31
8	तुला	24:23:02
9	वृश्चिक	20:54:29
10	धनु	14:06:09
11	मकर	08:23:56
12	कुम्भ	08:27:17

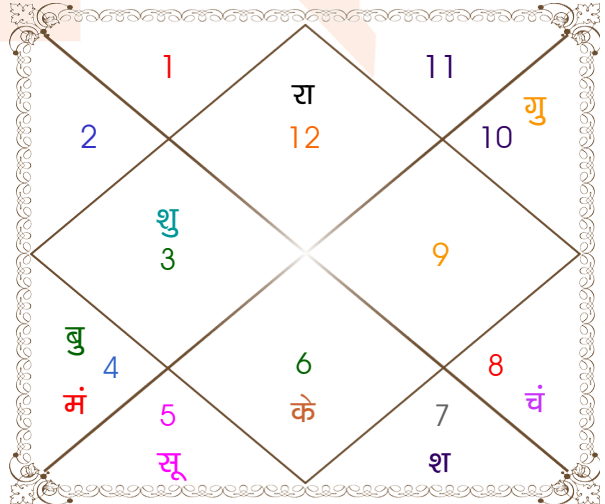
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती
अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा
मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा

चलित कुंडली



भाव कुंडली



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : केतु 1 वर्ष 7 मास 11 दिन

केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष
25/08/1985	07/04/1987	07/04/2007	07/04/2013	07/04/2023
07/04/1987	07/04/2007	07/04/2013	07/04/2023	07/04/2030
00/00/0000	शुक्र 07/08/1990	सूर्य 26/07/2007	चंद्र 05/02/2014	मंगल 03/09/2023
00/00/0000	सूर्य 07/08/1991	चंद्र 24/01/2008	मंगल 06/09/2014	राहु 21/09/2024
00/00/0000	चंद्र 07/04/1993	मंगल 31/05/2008	राहु 07/03/2016	गुरु 28/08/2025
00/00/0000	मंगल 07/06/1994	राहु 25/04/2009	गुरु 07/07/2017	शनि 06/10/2026
00/00/0000	राहु 06/06/1997	गुरु 11/02/2010	शनि 05/02/2019	बुध 04/10/2027
00/00/0000	गुरु 05/02/2000	शनि 24/01/2011	बुध 07/07/2020	केतु 01/03/2028
25/08/1985	शनि 07/04/2003	बुध 30/11/2011	केतु 05/02/2021	शुक्र 01/05/2029
शनि 10/04/1986	बुध 05/02/2006	केतु 06/04/2012	शुक्र 06/10/2022	सूर्य 06/09/2029
बुध 07/04/1987	केतु 07/04/2007	शुक्र 07/04/2013	सूर्य 07/04/2023	चंद्र 07/04/2030

राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष
07/04/2030	06/04/2048	06/04/2064	07/04/2083	07/04/2100
06/04/2048	06/04/2064	07/04/2083	07/04/2100	00/00/0000
राहु 18/12/2032	गुरु 25/05/2050	शनि 10/04/2067	बुध 03/09/2085	केतु 03/09/2100
गुरु 14/05/2035	शनि 06/12/2052	बुध 18/12/2069	केतु 31/08/2086	शुक्र 04/11/2101
शनि 19/03/2038	बुध 14/03/2055	केतु 27/01/2071	शुक्र 01/07/2089	सूर्य 11/03/2102
बुध 06/10/2040	केतु 18/02/2056	शुक्र 29/03/2074	सूर्य 07/05/2090	चंद्र 10/10/2102
केतु 24/10/2041	शुक्र 19/10/2058	सूर्य 11/03/2075	चंद्र 07/10/2091	मंगल 09/03/2103
शुक्र 24/10/2044	सूर्य 07/08/2059	चंद्र 09/10/2076	मंगल 03/10/2092	राहु 26/03/2104
सूर्य 18/09/2045	चंद्र 06/12/2060	मंगल 18/11/2077	राहु 22/04/2095	गुरु 02/03/2105
चंद्र 20/03/2047	मंगल 12/11/2061	राहु 24/09/2080	गुरु 28/07/2097	शनि 26/08/2105
मंगल 06/04/2048	राहु 06/04/2064	गुरु 07/04/2083	शनि 07/04/2100	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल केतु 1 वर्ष 7 मा 14 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - शनि 28/08/2025 06/10/2026	मंगल - बुध 06/10/2026 04/10/2027	मंगल - केतु 04/10/2027 01/03/2028	मंगल - शुक्र 01/03/2028 01/05/2029	मंगल - सूर्य 01/05/2029 06/09/2029
शनि 31/10/2025 बुध 27/12/2025 केतु 20/01/2026 शुक्र 28/03/2026 सूर्य 17/04/2026 चंद्र 21/05/2026 मंगल 14/06/2026 राहु 13/08/2026 गुरु 06/10/2026	बुध 27/11/2026 केतु 18/12/2026 शुक्र 16/02/2027 सूर्य 06/03/2027 चंद्र 05/04/2027 मंगल 27/04/2027 राहु 20/06/2027 गुरु 07/08/2027 शनि 04/10/2027	केतु 12/10/2027 शुक्र 06/11/2027 सूर्य 14/11/2027 चंद्र 26/11/2027 मंगल 05/12/2027 राहु 27/12/2027 गुरु 16/01/2028 शनि 09/02/2028 बुध 01/03/2028	शुक्र 11/05/2028 सूर्य 01/06/2028 चंद्र 07/07/2028 मंगल 31/07/2028 राहु 03/10/2028 गुरु 29/11/2028 शनि 05/02/2029 बुध 06/04/2029 केतु 01/05/2029	सूर्य 07/05/2029 चंद्र 18/05/2029 मंगल 25/05/2029 राहु 14/06/2029 गुरु 01/07/2029 शनि 21/07/2029 बुध 08/08/2029 केतु 15/08/2029 शुक्र 06/09/2029
मंगल - चंद्र 06/09/2029 07/04/2030	राहु - राहु 07/04/2030 18/12/2032	राहु - गुरु 18/12/2032 14/05/2035	राहु - शनि 14/05/2035 19/03/2038	राहु - बुध 19/03/2038 06/10/2040
चंद्र 23/09/2029 मंगल 06/10/2029 राहु 07/11/2029 गुरु 05/12/2029 शनि 08/01/2030 बुध 07/02/2030 केतु 20/02/2030 शुक्र 27/03/2030 सूर्य 07/04/2030	राहु 02/09/2030 गुरु 11/01/2031 शनि 16/06/2031 बुध 03/11/2031 केतु 31/12/2031 शुक्र 12/06/2032 सूर्य 31/07/2032 चंद्र 21/10/2032 मंगल 18/12/2032	गुरु 14/04/2033 शनि 31/08/2033 बुध 02/01/2034 केतु 22/02/2034 शुक्र 18/07/2034 सूर्य 31/08/2034 चंद्र 12/11/2034 मंगल 02/01/2035 राहु 14/05/2035	शनि 25/10/2035 बुध 21/03/2036 केतु 21/05/2036 शुक्र 10/11/2036 सूर्य 01/01/2037 चंद्र 29/03/2037 मंगल 29/05/2037 राहु 01/11/2037 गुरु 19/03/2038	बुध 29/07/2038 केतु 22/09/2038 शुक्र 24/02/2039 सूर्य 12/04/2039 चंद्र 28/06/2039 मंगल 22/08/2039 राहु 08/01/2040 गुरु 11/05/2040 शनि 06/10/2040
राहु - केतु 06/10/2040 24/10/2041	राहु - शुक्र 24/10/2041 24/10/2044	राहु - सूर्य 24/10/2044 18/09/2045	राहु - चंद्र 18/09/2045 20/03/2047	राहु - मंगल 20/03/2047 06/04/2048
केतु 28/10/2040 शुक्र 31/12/2040 सूर्य 19/01/2041 चंद्र 20/02/2041 मंगल 15/03/2041 राहु 11/05/2041 गुरु 01/07/2041 शनि 31/08/2041 बुध 24/10/2041	शुक्र 25/04/2042 सूर्य 19/06/2042 चंद्र 18/09/2042 मंगल 21/11/2042 राहु 04/05/2043 गुरु 28/09/2043 शनि 19/03/2044 बुध 21/08/2044 केतु 24/10/2044	सूर्य 10/11/2044 चंद्र 07/12/2044 मंगल 26/12/2044 राहु 13/02/2045 गुरु 29/03/2045 शनि 20/05/2045 बुध 06/07/2045 केतु 25/07/2045 शुक्र 18/09/2045	चंद्र 03/11/2045 मंगल 04/12/2045 राहु 25/02/2046 गुरु 09/05/2046 शनि 03/08/2046 बुध 20/10/2046 केतु 21/11/2046 शुक्र 20/02/2047 सूर्य 20/03/2047	मंगल 11/04/2047 राहु 08/06/2047 गुरु 29/07/2047 शनि 28/09/2047 बुध 21/11/2047 केतु 13/12/2047 शुक्र 15/02/2048 सूर्य 05/03/2048 चंद्र 06/04/2048

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

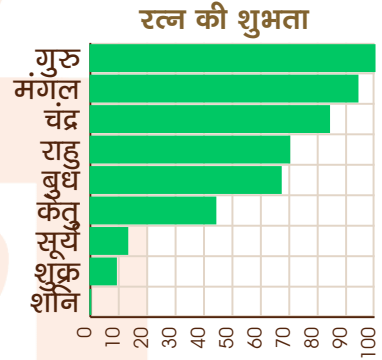
मूलांक	7
भाग्यांक	2
मित्र अंक	2, 3, 6, 7
शत्रु अंक	4, 5, 8
शुभ वर्ष	25,34,43,52,61
शुभ दिन	सोम, मंगल, गुरु
शुभ ग्रह	चन्द्र, मंगल, गुरु
मित्र राशि	मीन, सिंह
मित्र लग्न	मिथुन, वृश्चिक, मकर
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	पुखराज
शुभ उपरत्न	सुनहला, पीला हकीक
भाग्य रत्न	मूंगा
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	पीत
शुभ दिशा	पूर्वोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प
दान अन्न	दाल चना
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पुखराज	गुरु	100%	धनार्जन, व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य
मूंगा	मंगल	94%	सन्तति सुख, धन, भाग्योदय
मोती	चंद्र	84%	व्यावसायिक उन्नति, सन्तति सुख
गोमेद	राहु	70%	धन, सन्तति सुख
पन्ना	बुध	67%	सन्तति सुख, सुख, दम्पति
लहसुनिया	केतु	44%	दुर्घटना, सन्तति कष्ट
माणिक्य	सूर्य	13%	शत्रु व रोग
हीरा	शुक्र	9%	सन्तति कष्ट, पराक्रम हानि, दुर्घटना
नीलम	शनि	0%	दुर्घटना, हानि, व्यय



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
केतु	07/04/1987	0%	72%	100%	67%	100%	22%	0%	58%	59%
शुक्र	07/04/2007	0%	72%	94%	73%	100%	34%	12%	77%	53%
सूर्य	07/04/2013	38%	91%	100%	67%	100%	0%	0%	58%	19%
चंद्र	07/04/2023	26%	97%	94%	73%	100%	9%	0%	58%	19%
मंगल	07/04/2030	26%	91%	100%	55%	100%	9%	0%	58%	53%
राहु	06/04/2048	0%	72%	81%	67%	100%	22%	12%	83%	19%
गुरु	06/04/2064	26%	91%	100%	55%	100%	0%	0%	70%	44%
शनि	07/04/2083	0%	72%	81%	73%	100%	22%	25%	77%	19%
बुध	07/04/2100	26%	72%	94%	80%	100%	22%	0%	70%	44%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	17/09/1985-17/12/1987	-----	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	17/12/1987-21/03/1990	20/06/1990-15/12/1990	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	21/03/1990-20/06/1990	15/12/1990-05/03/1993	15/10/1993-10/11/1993
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	02/06/1995-10/08/1995	16/02/1996-17/04/1998	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	06/09/2004-13/01/2005	26/05/2005-01/11/2006	10/01/2007-16/07/2007

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	26/01/2017-21/06/2017	26/10/2017-24/01/2020	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	24/01/2020-29/04/2022	12/07/2022-17/01/2023	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----	-----

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	सम	बदनामी
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	व्यावसाय
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	शुभ	धनार्जन
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	स्वास्थ्य
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	सन्तति कष्ट

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति चन्द्रमा से अष्टम भाव में है। अतः आप एक मांगलिक कन्या हैं। चूंकि आपकी कुंडली में यह दोष भंग नहीं हो रहा है अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। यदा कदा आप पित या गर्मी के द्वारा शारीरिक परेशानी की अनुभूति करेंगी। पति का स्वास्थ्य भी मध्यम ही रहेगा तथा स्वभाव से यदा कदा वे उग्रता के भाव का भी प्रदर्शन कर सकते हैं। इससे परस्पर संबंधों में मतभेद उत्पन्न होंगे लेकिन इसका प्रभाव अल्पकालिक रहेगा तथा कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। आपको अपने सांसारिक महत्व के कार्यों को पूर्ण करने में अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। साथ ही विवाह में भी किंचित मात्रा में विलम्ब हो सकता है लेकिन अन्त में आपको सफलता अवश्य प्राप्त होगी। आपका दाम्पत्य जीवन शान्ति पूर्वक व्यतीत होगा। इसके अतिरिक्त चन्द्रमा से मंगल का दोष अल्प माना जाता है। अतः सामान्यतया शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त होंगे।

आपकी चन्द्रकुंडली में मंगल की स्थिति अष्टम भाव में है। अतः आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य सामान्यतया मध्यम ही रहेगा तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में परिश्रम तथा पराक्रम से ही सफलता होगी। एकादश भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आपके आय स्रोतों में उन्नति होगी तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में आप समर्थ रहेंगी। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि से पारिवारिक शान्ति मध्यम रहेगी। यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद भी उत्पन्न होंगे साथ ही वाणी में भी ओजस्विता का भाव विद्यमान रहेगा। धनऐश्वर्य की स्थिति उत्तम रहेगी। तृतीय भाव पर मंगल की स्थिति के प्रभाव से भाई बहनों का सुख एवं सहयोग सामान्य रहेगा परन्तु पराक्रम में वृद्धि होगी। मन में आत्मविश्वास का भाव बना रहेगा। अतः आप अपने कार्य क्षेत्र में उन्नतिशील रहेंगे एवं मानसिक सन्तुष्टि भी बनी रहेगी।

अपने दाम्पत्य जीवन को सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी ऐसे मांगलिक पुरुष से विवाह करना चाहिए जिसकी कुंडली से आपका परस्पर मांगलिक दोष भंग हो सके। इसके लिए पुरुष की कुंडली में मांगलिक स्थानों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में शनि राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए इस प्रकार मांगलिक दोष भंग हो जाने पर आपके सुख एवं सौभाग्य में वृद्धि होगी। प्रचुर मात्रा में सांसारिक सुखों का उपभोग करते हुए आपका दाम्पत्य जीवन व्यतीत होगा तथा परस्पर संबंधों में भी मधुरता बनी रहेगी एवं एक दूसरे को अपना सहयोग प्रदान करने में आप तत्पर रहेंगे।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराऊंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- चन्द्र पर राहु और शनि दोनों का प्रभाव है।
- पंचम भाव के स्वामी पर शनि और राहु का प्रभाव है।
- नवम भाव का स्वामी नीचस्थ है और उस पर शनि का प्रभाव है।
- शुक्र, बुध और राहु 2, 5, 9 या 12 वें भाव में स्थित है।

आपकी कुण्डली में चन्द्र, मंगल, बुध, शुक्र और राहु के कारण पितृदोष है।

आपकी कुण्डली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी “ॐ नमः शिवाय” का मंत्र जाप करें। दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें। ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें।

आपकी कुण्डली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ

आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए।

आपकी कुंडली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आशीर्वाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें।

आपकी कुंडली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें। 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें।

आपकी कुंडली में राहु पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ शनिवार गाय को सवा पांच किलो जौ सवा किलो गुड़ में मिलाकर खिलाना चाहिए। सूखे गोले में पंजीरी भरकर काले कपड़े में लपेटकर किसी सुनसान जगह पर मिट्टी में दबाएं। कबूतरों को दाना, चींटी को आटा तथा मछलियों को आटे की गोली बनाकर खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

षष्ठभाव में सूर्य हो तो जातक वीर्यवान्, मातुल कष्टकारक, तेजस्वी, शत्रुनाशक, बलवान्, श्रीमान्, निरोगी एवं न्यायवान् होता है।

सिंह राशि में रवि हो तो जातक सत्संगी पुरुषार्थी, योगाभ्यासी, वनविहारी, कोधी, गम्भीर, उत्साही, तेजस्वी एवं धैर्यशाली होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य षष्ठ भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी अच्छी रहेगी। फिर भी यदा कदा शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। धनैश्वर्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको पूर्ण रूपेण अपना आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग प्रदान करते रहेंगे जिससे आपको कोई कष्ट न हो। साथ ही शत्रुवर्ग से भी आप का नित्य बचाव करते रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन भी नित्य करती रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर होंगे। परन्तु यदा कदा आपसी मतभेद भी रहेंगे जिससे कभी कभी आपसी संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा परन्तु अल्प समय में ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। आप जीवन में अपनी ओर से उनका पूर्ण ध्यान रखेंगी एवं किसी भी प्रकार से वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी।

चन्द्र

दसवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक कार्यकुशल, व्यापारी, कार्यपरायण, सुखी, यशस्वी, विद्वान्, कुल-दीपक, दयालु, निर्बल बुद्धि, सन्तोषी लोकहितैषी, मानी, प्रसन्नचित्त एवं दीर्घायु होता है।

धनु राशि में चन्द्रमा हो तो जातक वक्त, सुन्दर, शिल्पज्ञ, शत्रुविनाशक उच्च बौद्धिक स्तर वाला, सुखी विवाहित जीवन, विरासत में धन सम्पत्ति पाने वाला, साहित्य के प्रति रुचि का दिखावा करने वाला एवं लेखक होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति दशम भाव में है। अतः माता का आप पूर्ण स्नेह प्राप्त करेंगी। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। धन सम्पत्ति तथा अन्य आवश्यक सुख संसाधनों से वे युक्त रहेंगी तथा जीवन के आवश्यक कार्यों में आपको अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही आप आजीविका, व्यापार तथा यश प्राप्ति भी उन्हीं के सहयोग से अर्जित करने में सफल होंगी।

आप उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा भाव रखेंगी एवं समयानुसार उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए भी तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध अच्छे रहेंगे तथा यदा कदा आपस में सैद्धान्तिक मतभेद होंगे किन्तु उससे आपके संबंधों में कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। आप भी उनकी सुख सुविधा का पूर्ण ध्यान रखेंगी तथा हर सम्भव उनका सहयोग करने के लिए तत्पर

रहेंगी। इस प्रकार आप एक दूसरों के लिए सामान्य रूप से शुभ ही समझी जाएंगी।

मंगल

पंचम भाव में मंगल हो तो जातक बुद्धिमान्, चंचल, गुप्तरोगी, कृशशरीरी, रोगी, विशेष रूप से उदररोगी, व्यसनी, कपटी, उबुद्धि एवं सन्तति-क्लेश युक्त होता है।

कर्क राशि में मंगल हो तो जातक कुशाबुद्धिवाला, धनवान्, बदमाश, कुशलचिकित्सक, या सर्जन, चंचलमनवाला सुखाभिलाषी, कृषक, रोगी एवं दुष्ट होता है।

आपके जन्म समय में मंगल पंचम भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का आप मध्यम रूप से सुख प्राप्त करेंगी। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु कभी कभी शारीरिक अस्वस्थता भी रहेगी। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे। जीवन में वे आपको सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण क्षेत्रों में अपना योगदान प्रदान करेंगे तथा सुख दुःख में आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता देंगे। इसके साथ ही शिक्षा संबंधी कार्यों में भी आप उनका वांछित सहयोग प्राप्त करेंगी।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा तथा आपसी संबंध भी प्रायः मधुर ही रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी सैद्धान्तिक मतभेदों से संबंधों में कटुता या तनाव भी उत्पन्न होंगे परन्तु कुछ समय बाद सब कुछ स्वतः ही सामान्य हो जाएगा। आप सुख दुःख में हमेशा उनका सहयोग करेंगी एवं अपनी ओर से कभी भी उन्हें किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगी। इसके अतिरिक्त अवसरानुकूल आप उन्हें आर्थिक सहायता भी प्रदान करेंगी। इस प्रकार आप मध्यम रूप से एक दूसरे का सुख प्राप्त करेंगे।

बुध

पंचमभाव में बुध हो तो जातक उद्यमी, विद्वान्, कवि, प्रसन्न कुशाग्रबुद्धि, गण्य-मान्य, सुखी, वाद्यप्रिय एवं सदाचारी होता है।

कर्क राशि में बुध हो तो जातक नीतिकुशल, सूक्ष्माही, अत्यन्त कामुक, छोटाकदवाला, अनैतिक चरित्र, अनिश्चित स्वभाव, वाचाल, गवैया, परदेशवासी, प्रसिद्ध एवं परिश्रमी होता है।

गुरु

ग्यारहवें भाव में गुरु हो तो जातक व्यवसायी, धनिक, सन्तोषी, सुन्दरनिरोगी, लाभवान्, पराकमी, सद्ब्ययी, बहुस्त्रीयुक्त, विद्वान् राजपूज्य एवं अल्पसन्ततिवान् होता है।

मकर राशि में गुरु हो तो जातक प्रवासी, द्रव्यहीन, व्यर्थपरिश्रमी, चंचलचित्त, धूर्त, असभ्य आचरण, दुःखी एवं ईर्ष्यालु होता है।

शुक्र

पंचम भाव में शुक्र हो तो जातक विद्वान्, प्रतिभाशाली, वक्ता, कवि, पुत्रवान्, लाभयुक्त, व्यवसायी, शत्रुनाशक, उदार, दानी, सद्गुणी, न्यायवान् एवं आस्तिक होता है।

कर्क राशि में शुक्र हो तो जातक धार्मिक, ज्ञाता, सुन्दर, सुख और धन का इच्छुक, नीतिज्ञ, आवेशपूर्ण, डरपोक, दुःखी एवं प्रचुर सन्तान होता है।

शनि

अष्टम भाव में शनि हो तो जातक विद्वान् स्थूलशरीर, उदार प्रकृति, कपटी, गुप्तरोगी, वाचाल, डरपोक, कुष्ठरोगी एवं धूर्त होता है।

तुला राशि में शनि हो तो जातक राजनीति में रुचि रखने वाला, प्रसिद्धनेता, धनी, सम्मानित शक्तिशाली, दानशील, परस्त्रियों में रुचि, सुभाषी, यशस्वी, स्वाभिमानी एवं उन्नतिशील होता है।

राहु

द्वितीय भाव में राहु हो तो जातक संहशील, अल्पधनवान्, कठोरभाषी, कुटुम्बहीन, अल्पसन्तति, मात्सर्ययुक्त एवं परदेशगामी होता है।

मेष राशि में राहु हो तो जातक-पराकर्महीन, आलसी, अविवेकी एवं अनैतिक चरित्र होता है।

केतु

अष्टम भाव में केतु हो तो जातक दुर्बुद्धि, स्त्रीद्वेषी, चालाक, दुष्टजनसेवी, तेजहीन, नीच, स्त्री की कुण्डली में पति के लिए अशुभ एवं अल्पायु होता है।

तुला राशि में केतु हो तो जातक कुष्ठरोगी, दुःखी, क्रोधी एवं कामी होता है।

दशा विश्लेषण

**महादशा :- मंगल
(07/04/2023 - 07/04/2030)**

मंगल की महादशा 07/04/2023 को आरम्भ और 07/04/2030 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्ष होगी। इसके पहले आपकी चन्द्र की 10 वर्ष की महादशा चल रही थी। चन्द्र के अष्टम भाव का स्वामी होने के कारण आपको अचानक धन की प्राप्ति, अप्रत्याशित विकास, रहस्य-विज्ञान में रुचि, सट्टे से लाभ और विदेशी स्रोतों से धन का लाभ हुआ होगा।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप में दैनिक जीवन के प्रति आत्मविश्वास, साहस उत्साह की उत्पत्ति होगी। मौसमी बीमारियों को छोड़ आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप पित्तदोष, पाचन सम्बंधी गड़बड़ी, सरदर्द, ज्वर और कभी-कभी हृदयगति की गड़बड़ी से ग्रसित हो सकते हैं। किन्तु ये गम्भीर नहीं होंगे। आपका जीवन सामान्यतः ठीक रहेगा। महिलाओं को अपने स्वास्थ्य के प्रति सावधान रहना होगा।

अर्थ तथा व्यवसाय :

आपको सट्टे तथा लाभदायक निवेश से लाभ होगा। कभी-कभी खासकर मंगल की महादशा में आपका नुकसान हो सकता है, सावधानी बरतें। फिर भी विदेशी स्रोतों से आपकी आय होती रहेगी। इस दशा में आपका धन-संचय होगा। जीविका के लिए सिविल तथा मेकैनिकल इंजीनियरिंग, सैन्य सेवा, दवाओं का कारोबार, दन्तचिकित्सक का कार्य, खेल-सामग्री, ताम्बे और खनिज आदि का कारोबार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों का परिवर्तन होगा और वह लाभदायक होगा। आप अपने कार्यस्थल में जाने जायेंगे, और आपको मान्यता तथा सहयोगियों और उच्चाधिकारियों से सद्भाव की प्राप्ति होगी। व्यवसायियों-व्यापारियों के कार्य में भी परिवर्तन और घर परिवर्तन लाभदायक होगा। लक्ष्य की प्राप्ति के लिये आपको कुछ कठिन परिश्रम करना पड़ सकता है। इस दशा के दौरान अप्रत्याशित प्रगति, अचानक धन की प्राप्ति और विदेशी स्रोतों से लाभ की सम्भावना है।

वाहन, यात्रा, जायदाद :

गुरु की अन्तर्दशा के दौरान आपको वाहन-सुख मिलेगा। इस दशा में आपको यातायात से लाभ होगा। जमीन-जायदाद के मामले उभरेंगे। चन्द्र की अन्तर्दशा में आपको कुछ अप्रत्याशित धन का लाभ हो सकता है। शनि की अन्तर्दशा में आपकी कुछ छोटी और मंगल तथा सूर्य की अन्तर्दशा में लम्बी यात्राएँ हो सकती हैं। आपकी विदेश यात्रा भी हो सकती है।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा अति उत्तम होगी। तकनीकी शिक्षा, गणित, लेखा, इंजीनियरिंग, विज्ञान आदि का अध्ययन आपके लिए लाभदायक होगा। आपको परीक्षा में सफलता मिलेगी। शिक्षण-वृत्ति के मध्य कुछ लाभदायक परिवर्तन हो सकता है। आपका

नेतृत्व गुण सामने आएगा।

परिवार :

परिवार के सदस्यों के साथ आपका संबंध उत्तम होगा। आपके बच्चे आपके सुख व लाभ के स्रोत हो सकते हैं। आपके जीवन साथी को हर प्रकार का लाभ, विरोधियों पर विजय और उनसे लाभ हो सकता है। आपके साझेदार के साथ आपका सम्बन्ध उत्तम होगा। आपकी माता को लाभ और समृद्धि की प्राप्ति होगी और पिता की अचल सम्पत्ति, धन तथा यात्राओं में वृद्धि होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को शक्ति, यश और ख्याति की प्राप्ति होगी और वे प्रगति करेंगे। आपके बड़े भाई-बहनों के लिए यह दशा लाभदायक होगी। आपके व्यावसायिक साझेदारों में आपके अनेक मित्र होंगे और आपको उनसे लाभ मिलेगा। कुल मिलाकर यह दशा उत्तम है।

अन्तर्दशा :

मंगल की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के कारण लाभ तथा सन्तान से सुख मिलेगा। आगे राहु की दशा कुछ समस्याएँ खड़ी कर सकती है। चतुर्थ तथा लग्न के स्वामी गुरु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप धन तथा सुख आरम्भ की प्राप्ति हो सकती है। शनि की अन्तर्दशा के कारण छोटी यात्रा और कुछ मामूली परिवर्तन हो सकता है जबकि बुध के फलस्वरूप साझेदारी में लाभ और जीवन में उन्नति होगी। आगे आने वाली केतु की अन्तर्दशा के दौरान कुछ मानसिक या शारीरिक समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप कुछ स्वास्थ्य समस्याएँ और लाभ हो सकता है जबकि सूर्य की अन्तर्दशा के कारण समृद्धि की प्राप्ति तथा यात्रा होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप कुछ परिवर्तन होगा।

**अंतर्दशा :- मंगल - शनि
(28/08/2025 - 06/10/2026)**

आपके लिए मंगल की महादशा 07/04/2023 को आरंभ हुई थी। इस महादशा में चौथी अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 1 मास 9 दिन रहेगी। आपके लिए यह 28/08/2025 को प्रारंभ होकर 06/10/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, सेवा और पश्चिम दिशा का कारक है।

इस अवधि में आप विवाह द्वारा धन लाभ प्राप्त कर सकते हैं। व्यापार या विरासत से भी धन आ सकता है। अध्यात्म में रुचि होगी। परिवार की जिम्मेदारियों को ठीक प्रकार से निभाएंगे। घर में शांति रहेगी। खानपान में देखभाल ओर नियंत्रण रखें। खुद की कमाई आमदनी भी पर्याप्त होगी। संतान से सुख मिलेगा। प्रसिद्धि और उच्चपद का योग है। प्रोन्नति के साथ तबादला हो सकता है।

आपके जीवनसाथी की आय में वृद्धि होगी। आपके पिता अध्यात्म में रुचि रखेंगे। माता को पहले किये गये निवेश से लाभ होगा। आपके भाई-बहन सब बाधाओं को पार कर लेंगे, उनकी प्रोन्नति हो सकती है।

आपकी संतान को नींव मजबूत करने के लिए परिश्रम करना होगा। अगर वे सेवारत हैं तो अचल संपत्ति से आय हो सकती है।

अगर आप सेवारत हैं तो विरोधी परास्त होंगे, सफलता मिलेगी। व्यापारियों और परामर्शदाताओं की आय में वृद्धि होगी।

आपका स्वास्थ्य सामान्यतः उत्तम रहेगा। नेत्ररोग और पित्त के विकारों से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए उड़द की दाल, काले तिल, काले वस्त्र और सरसों का तेल दान में दें।

**अंतर्दशा :- मंगल - बुध
(06/10/2026 - 04/10/2027)**

आपके लिए मंगल की महादशा 07/04/2023 को प्रारंभ हुई थी। इसमें पांचवी अंतर्दशा बुध की है जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन है। आपके लिए यह 06/10/2026 को प्रारंभ होकर 04/10/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध वाणी, शिक्षा और सम्मान का कारक है।

इस अवधि में आपको सट्टे और शेयरों से लाभ हो सकता है। आपकी बुद्धि तीव्र है। कला, कविता, नाटक, खेलकूद आदि में रुचि ले सकते हैं। संतान द्वारा सुख मिलेगा, संतान का जन्म भी हो सकता है। संतान की शिक्षा-दीक्षा आदि में रुचि लेंगे। साहित्य और विज्ञान के विशेषज्ञों से मित्रता होगी। धन का संचय होगा। मन में बहुत से आविष्कार के योग्य विचार आएंगे।

आपके जीवनसाथी धन कमाएंगे। आपके पिता की यात्राएं होंगी, दर्शन और अध्यात्म में दिल लगेगा, लेखन-प्रकाशन से लाभ पाएंगे। माता को पारिवारिक सुख रहेगा। भाई-बहन कला और संचार माध्यम से धन कमा सकते हैं, उनकी यात्राएं होंगी, विदेश यात्रा भी संभव है।

आपकी संतान को परीक्षा में सफलता मिलेगी; संचार-माध्यम से लाभ उठा सकते हैं। अगर वे सेवारत हैं तो धन, यात्रा और लक्ष्यप्राप्ति का योग है।

अगर आप सेवारत हैं तो बाधाएं आ सकती हैं, तबादला हो सकता है। परामर्शदाता धन और प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे। व्यापारियों को विभिन्न माध्यमों से फायदा होगा।

स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। चिड़चिड़ेपन से बचें। शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध गायत्री मंत्र का जाप करें।

**अंतर्दशा :- मंगल - केतु
(04/10/2027 - 01/03/2028)**

आपके लिए मंगल की महादशा 07/04/2023 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा केतु की है जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 04/10/2027 को प्रारंभ होकर 01/03/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु नाना और मोक्ष का कारक है।

इस अवधि में धन का संचय हो सकता है। जीवनसाथी के माध्यम से धन का लाभ होगा। आपकी अंतर्ज्ञान शक्ति उत्तम है। अध्यात्म में रुचि लेंगे। विरासत, वसीयत, उपहार आदि से धनागम हो सकता है। कटु वचन न बोलें, अन्यथा परिवार की शांति भंग हो सकती है। स्वास्थ्यवर्धक, शुद्ध भोजन ही ग्रहण करें। दूसरों पर निर्भरता में कमी करें।

आपके जीवनसाथी के धन का संचय होगा; जीवन में खुशियां मिलेंगी। आपके पिता के खर्चे बढ़ सकते हैं। माता को निवेश से लाभ होगा। आपके भाई-बहन समस्याओं के समाधान में दृढ़संकल्प का परिचय देंगे; उनके परिवारजनों से उत्तम संबंध होंगे, कार्यक्षेत्र में तरक्की करेंगे।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम रहेगी; माता से संबंध उत्तम रहेंगे। अगर वे सेवारत हैं तो अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं; उनका घरेलू जीवन सुखी रहेगा।

अगर आप सेवारत हैं तो सफलता पाने के लिए परिश्रम करेंगे; संचार माध्यम से लाभ हो सकता है। परामर्शदाता और व्यापारी धन कमाएंगे।

मामूली व्याधियों को अनदेखा न करें। घाव, चोट आदि का ठीक से इलाज करवाएं। अरिष्ट से बचाव के लिए कुत्तों को भोजन दें।

**अंतर्दशा :- मंगल - शुक्र
(01/03/2028 - 01/05/2029)**

आपके लिए मंगल की महादशा 07/04/2023 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा शुक्र की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 2 मास होगी। आपके लिए यह 01/03/2028 को प्रारंभ होकर 01/05/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, कला और नफासत का कारक है।

इस अवधि में आप प्रसन्न रहेंगे, संतान का जन्म हो सकता है। धन का लाभ और संचय होगा। जीवन में खुशियां मिलेंगी। शत्रुओं पर जीत होगी। निवेश से लाभ होगा। घरेलू सुख मिलेगा। सुख के साधन उपलब्ध होंगे; सेवक भी मिल सकते हैं। आय अच्छी होगी। ललित कलाओं में रुचि होगी, शिक्षा उत्तम होगी, आकांक्षाओं की पूर्ति होगी।

आपके जीवनसाथी की इच्छाओं की पूर्ति होगी, वे भूमि और वाहन क्रय कर सकते हैं। आपके पिता की अध्यात्म में रुचि होगी। वे प्रसन्न रहेंगे। माता को विभिन्न माध्यमों से धन मिल सकता है; दान-धर्म में रुचि लेंगी। आपके भाई-बहन धनी बनेंगे; उनकी इच्छाएं पूरी होंगी, साझेदारी से लाभ हो सकता है, विवाह हो सकता है।

आपकी संतान अगर शिक्षारत है तो परीक्षा में सफल होगी। अगर वे सेवारत हैं तो धन कमाएंगे; घरेलू जीवन सुखी होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो अप्रत्याशित घटनाएं हो सकती हैं; तबादला हो सकता है। परामर्शदाताओं को भागीदारों से लाभ होगा। व्यापारी धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा, मगर जरूरत से अधिक परिश्रम से बचें। शुभत्व में वृद्धि के लिए लक्ष्मीजी की आराधना करें।

**अंतर्दशा :- मंगल - सूर्य
(01/05/2029 - 06/09/2029)**

आपकी मंगल की महादशा 07/04/2023 को प्रारंभ हो रही है। मंगल महादशा के अंतर्गत सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 4 मास 6 दिन है। आपके लिए सूर्य की अंतर्दशा 01/05/2029 को प्रारंभ होकर 06/09/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य आत्मा, स्वास्थ्य और ऊर्जा का कारक है।

इस अवधि में आपकी प्रतिद्वंद्वियों पर विजय होगी। आप स्वस्थ और ऊर्जावान होंगे और सब बाधाओं को पार कर लेंगे। उच्चपद प्राप्त होगा, जीवन में उन्नति होगी। प्रसिद्धि बढ़ेगी। कार्यों में सफलता और प्रसन्नता मिलेगी। औषधियों से संबंधित कार्य में सफलता मिल सकती है। प्रशासनिक क्षमता उत्तम रहेगी। प्राच्य विद्या में रुचि होगी। दूर की यात्रा संभव है या निवास परिवार से दूर हो सकता है।

जीवनसाथी बाधाओं को पार करेंगे और प्रतिद्वंद्वियों पर विजयी होंगे। आपके पिता

**महादशा :- राहु
(07/04/2030 - 06/04/2048)**

राहु की महादशा 07/04/2030 को आरम्भ और 06/04/2048 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में राहु द्वितीय भाव में बुध की राशि में स्थित है। इस स्थान से राहु की दृष्टि अष्टम भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 7 वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। आपकी यात्रा तथा व्यय और साझेदारों से लाभ होगा। राहु की इस दशा के दौरान आपको सम्पत्ति का लाभ, उत्तम शिक्षा और सरकार से संभावित आर्थिक लाभ मिलेगा।

स्वास्थ्य :



इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप शक्तिशाली और ऊर्जावान् होंगे। किन्तु मौसम में परिवर्तन के कारण गले का रोग, वाइरल बुखार, स्नायविक-दुर्बलता, चर्मरोग आदि मामूली रोग हो सकते हैं। कुछ सतर्कता बरत कर इनमें से कुछ से बचाव किया जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त मजबूत होगी। आपको पैतृक सम्पत्ति और उपहार में धन की प्राप्ति होगी। सट्टे तथा निवेश में लाभ हो सकता है। जीविका तथा व्यवसाय के लिए वायुयान-संचालन, अन्तरिक्ष अनुसन्धान, शिक्षण, ट्रेवल एजेण्ट, वायुसैनिक, लेखा-कार्य, कम्प्यूटर- विज्ञान, प्रकाशन आदि के क्षेत्र का चयन कर सकते हैं। कपड़ा, रत्न, चमड़ा, आयात-निर्यात, कागज, टेलीफोन, इलेक्ट्रॉनिक सामान आदि का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को सफलता, पदोन्नति, उच्च सम्मान और आय में वृद्धि होगी। आपको सहकर्मियों का सहयोग और उच्चाधिकारियों की शुभकामना प्राप्त होगी। व्यापार व्यवसाय से जुड़े लोगों को उपार्जन तथा लाभ में वृद्धि, व्यापार में विस्तार और सम्पत्ति की अचानक बाढ़ आएगी। आर्थिक खुशहाली के लिए यह दशा अत्यन्त उत्तम है और अप्रत्याशित प्रगति की सम्भावना है।

वाहन, यात्रा जायदाद :

इस दशा के दौरान आपका जीवन सुखमय रहेगा। आपको वाहन की प्राप्ति होगी। जायदाद के लिये भी यह दशा उत्तम है। जमीन-जायदाद में वृद्धि की संभावना है। आपका एक आरामदायक मकान होगा। चन्द्र की महादशा में आपकी छोटी यात्रा और मंगल की महादशा में लम्बी यात्रा होगी। मामूली नुकसान से बचाव के लिये सावधानी बरतें।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी उत्तम तकनीकी शिक्षा होगी। आप परीक्षा तथा प्रतियोगिता में श्रेष्ठता प्राप्त करेंगे। विज्ञान, इन्जीनियरिंग, लेखा-कार्य, वाणिज्य, लेखन, समाचार माध्यम आदि में आपकी रुचि होगी। आप तेज हैं तथा बौद्धिक गतिविधि से सम्बन्धित सभी विषयों में अच्छा करेंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका संबंध मधुर रहेगा। आप यदा-कदा परिवार से दूर रहेंगे। आपके बच्चे अच्छा करेंगे और आपको उनसे सुख मिलेगा। आपके जीवनसाथी को अचानक धन मिलेगा, हालाँकि कुछ स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्या और परिवर्तन हो सकता है। आपकी माता को समृद्धि और सम्पत्ति मिलेगी तथा उनके मित्र प्रभावशाली होंगे जबकि आपके पिता को आदर, सम्पत्ति तथा विरोधियों पर विजय मिलेगी। आपके छोटे भाई-बहनों को कुछ स्वास्थ्य समस्या होगी, व्यय होगा और विरोधियों तथा प्रतिद्वन्द्वियों के कारण निराशा मिलेगी। आपके बड़े भाई-बहनों को अचल सम्पत्ति, आवास में परिवर्तन तथा जीवन का सुख मिलेगा। इस दशा के दौरान आपको विभिन्न स्रोतों से धन की प्राप्ति तथा जीवन का सुख मिलेगा।

अन्तर्दशा :

Meenna Salaria Astro & Numerio

Delhi

9667113751

salaria.meena@gmail.com

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा में आपको सम्पत्ति और सुख की प्राप्ति होगी। गुरु की अन्तर्दशा में लाभ होगा और मामूली स्वास्थ्य समस्या होगी। शनि की अन्तर्दशा के दौरान यश, ख्याति, सफलता, सम्पत्ति आदि की प्राप्ति और यात्रा होगी। बुध की अन्तर्दशा में शिक्षा, परिवार में सुख और लाभ मिलेगा। शुक्र की अन्तर्दशा में यश, ख्याति, सम्पत्ति और सौभाग्य की प्राप्ति होगी जबकि उसके बाद शुरु होने वाली सूर्य की अन्तर्दशा के दौरान जमीन जायदाद में वृद्धि और माता से सुख मिलेगा। चन्द्र की अन्तर्दशा में आपकी छोटी यात्रा होगी और भाई-बहनों से सुख मिलेगा जबकि मंगल की अन्तर्दशा के दौरान व्यय, कुछ स्वास्थ्य समस्या और यात्रा होगी।



**अंतर्दशा :- राहु - राहु
(07/04/2030 - 18/12/2032)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 07/04/2030 को प्रारंभ होकर 06/04/2048 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 8 मास 12 दिन होगी जो आपके लिए 07/04/2030 को प्रारंभ होकर 18/12/2032 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में द्वितीय भाव में स्थित है। द्वितीय भाव भाग्य, लाभ-हानि, सांसारिक उपलब्धियां, रत्न, वाणी, दायीं आंख, महत्वाकांक्षा, जीभ, दांत और परिवार के सदस्यों का प्रतिनिधि है।

राहु छायाग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती। स्थिति के अनुसार यह शुभ या अशुभ हो सकता है। द्वितीय भाव में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली के अष्टम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके झगड़े, या अदालत में खर्चे आदि का संकेत है। आप अधिकारियों को नाराज कर सकते हैं, जिससे धन की हानि होगी। कटु वचन के कारण परिवार में अशांति हो सकती है, जिस कारण आप घर से अधिकतर दूर रहना पसंद कर सकते हैं। आपकी भावमुद्रा बीमार व्यक्ति के समान हो सकती है। नेत्ररोगों से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा।

अरिष्ट से बचाव के लिए 7 रत्ती का गोमेद चांदी की अंगूठी में अपने इष्टदेव की उपासना के बाद बायें हाथ की मध्यमा अंगुली में गंगाजल और कच्चे दूध से धोकर धारण करें।